जाग उठा हमारा आजाद हिन्दुस्तान

11 अक्टूबर 2022

रक्षासूत्र से बने विशाल शिवलिंग की पूजा करेंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

उज्जैन ■ एजेंसी

मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकाल मंदिर का विस्तारीकरण किया गया है। पहले इस मंदिर का क्षेत्रफल काफी कम था, जिसे बढ़ाकर अब 20 हेक्यटेर में कर दिया गया है। इसे महाकाल लोक का नाम दिया गया है। 11 अक्टूबर, मंगलवार को प्रधानमंत्री इसी प्रोजेक्ट का लोकार्पण करने उज्जैन आ रहे हैं।

लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान 200 संत भी कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे। विभिन्न राज्यों के करीब 700 कलाकार महाकाल लोक में अलग-अलग स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगे। लोकार्पण के बाद प्रधानमंत्री कार्तिक मेला ग्राउंड में जन सभा को संबोधित करेंगे।

6 राज्यों के कलाकार देंगे प्रस्तुति

महाकाल लोक लोकार्पण कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए 6 अलग-अलग राज्यों के कलाकार यहां प्रस्तुति देने आ चुके हैं।

यहां मालवा संस्कृति का नृत्य, गुजरात का गरबा, झारखंड के ट्राइबल एरिये से आए कलाकार भस्मासुर, केरल के कलाकार कथक और आंध्र प्रदेश के कलाकार कुचिपुड़ी नृत्य की प्रस्तुति देंगे।

रक्षा सूत्र से बना शिवलिंग

तय कार्यक्रम के अनुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 11 अक्टूबर, मंगलवार को शाम 6 बजे महाकाल मंदिर के नंदी द्वार पर लोकार्पण के लिए पहुंचेंगे। इसके पहले श्री मोदी 15 फीट ऊंचे रक्षा सूत्र से निर्मित शिवलिंग पर दीप प्रज्वलन करेंगे। महाकाल मंदिर से निकलकर प्रधानमंत्री शिप्रा तट पर मां शिप्रा को पुष्प अर्पित कर पूजा करेंगे।

अगले 50 साल की प्लानिंग है महाकाल लोक

महाकाल लोक को लेकर कहा जा रहा है कि आने वाले 50 साल को लेकर इसका योजना तैयार की गई है। विशेष अवसर जैसे शिवरात्रि, नागपंचमी और सिंहस्थ को लेकर यहां की दर्शन व्यवस्था बेहतर बनाई जा रही है, जो देश के किसी मंदिर में देखने को नहीं मिलेगी। प्लानिंग इस तरह की गई है कि एक घंटे में 30 हजार लोग दर्शन कर सकेंगे।

डेढ़ लाख भोजन के पैकेट बनेंगे

मंदिर समिति के प्रशासक संदीप सोनी के अनुसार, श्री मोदी की जनसभा में आने वाले सभी लोगों को भोजन के पैकेट दिए जाएंगे।

इसके लिए लगभग डेढ़ लाख भोजन पैकेट तैयार किए जाएंगे। पैकेट में भगवान महाकाल का विशेष लड्डू प्रसाद भी रखा जाएगा। रविवार से ही लड्डू प्रसाद यूनिट से लड्डू प्रसाद भोजन निर्माण स्थल पर भेजना शुरू कर दिया है।

महाकाल के अलावा ये मंदिर भी हैं प्रसिद्ध

उज्जैन ■ एजेंसी

मंगलवार उज्जैन के लिए एक ऐतिहासिक दिन रहेगा क्योंकि इसी दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यहां आकर महाकाल लोक का लोकार्पण करेंगे। उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के अलावा भी कई प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिर हैं। उज्जैन आना हो तो इन मंदिरों के दर्शन भी जरूर करने चाहिए।

हरसिद्धि शक्तिपीठ

उज्जैन में महाकाल ज्योतिर्लिंग के बाद दूसरा बड़ा मंदिर है हरसिद्धि शक्तिपीठ। ये मंदिर देवी के 52

शक्तिपीठों में से एक है। मान्यता है कि यहां देवी की कोहनी गिरी थी। ये राजा विक्रामादित्य की कुलदेवी भी हैं। शिलालेख के अनुसार, यहां कभी भैसों की बलि देने की परंपरा थी। ये मंदिर तंत्र-मंत्र से भी संबंधित है।

चिंतामन गणेश

ये मंदिर शहर से लगभग 5 किमी दूर है। मान्यता है

कि भगवान श्रीगणेश के इस मंदिर की स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। इसके सामने स्थित एक बावड़ी है, जिसे लक्ष्मण बावड़ी कहते हैं। कहते हैं कि लक्ष्मण ने बाण चलाकर यहां से पानी निकाला था। किसी भी शुभ काम से पहले चिंतामन गणेश को आमंत्रण पत्र देने की परंपरा है।

कालभैरव मंदिर

ये मंदिर भी काफी प्राचीन और प्रसिद्ध है। यहां

भगवान कालभैरव के मुख की प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर के मुख पर शराब का पात्र लगाने से शराब खत्म हो जाती है, कहते हैं शराब ही कालभैरव का प्रमुख भोग है। दूर-दूर से तांत्रिक यहां आते हैं। इन्हें भगवान महाकाल का कोतवाल भी कहा जाता है।

मंगलनाथ मंदिर

ये मंदिर अंकपात मार्ग पर स्थित है। मान्यता है कि

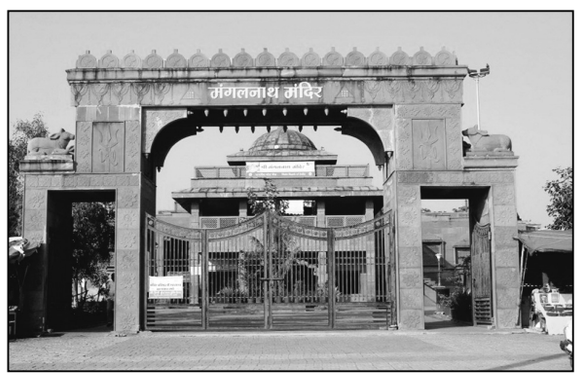

मंगल ग्रह की उत्पत्ति इसी स्थान से हुई हैं। यहां मंगल के रूप में शिवलिंग की पूजा की जाती है। जिन लोगों को मंगल दोष होता वे यहां आकर पूजा-पाठ करवाते हैं। धर्म ग्रंथों में मंगल को पृथ्वी का ही पुत्र कहा गया है।

सिद्धनाथ मंदिर

ये स्थान तर्पण व श्राद्ध के लिए प्रसिद्ध है। कई ग्रंथों

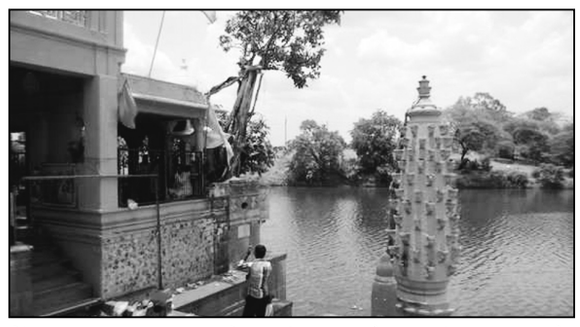

में इस स्थान का उल्लेख मिलता है। स्कंद पुराण के अनुसार, इसी स्थान पर शिवपुत्र कार्तिकेय का मुंडन हुआ था। यहां स्थित वटवृक्ष की महिमा वाराणसी के अक्षय वट के समान मानी गई है। कहते हैं मुगलों ने इस वटवृक्ष को कटवा कर इस पर लोहे के तवे जड़ दिए थे, लेकिन ये वृक्ष उन लोहे के तवों को फोड़कर पुनः हरा-भरा हो गया।

गढ़कालिका मंदिर

ये मंदिर महाकवि कालिदास की कुलदेवी को समर्पित है। जहां ये मंदिर है, कभी वह स्थान शहर से बाहर हुआ करता था। ये स्थान भी तंत्र-मंत्र के लिए जाना जाता है। नवरात्रि में यहां दूर-दूर से तंत्र साधक आते हैं। दशहरे पर यहां आने वाले भक्तों को खास अभिमंत्रित नींबू दिए जाते हैं।

सांदीपनि आश्रम

धर्म ग्रंथों के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण शिक्षा ग्रहण करने उज्जैन आए थे। जहां उन्होंने गुरु सांदीपनि से शिक्षा ग्रहण की, आज भी वो स्थान लोगों के लिए श्रद्धा का केंद्र हैं। इस स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण के साथ-साथ गुरु

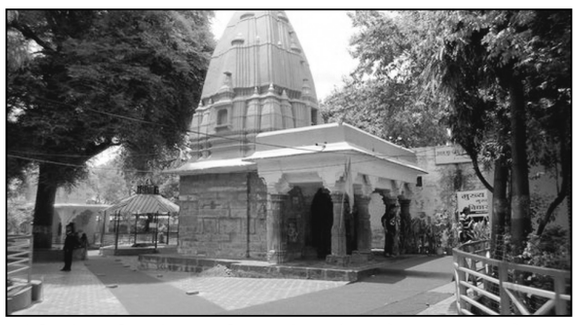

सांदीपनि की प्रतिमा भी स्थापित है। लोग दूर-दूर से इस स्थान को देखने आते हैं।

बड़ा गणेश मंदिर

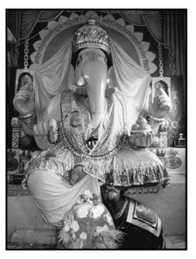

महाकाल मंदिर के पास ही स्थित है बड़ा गणेश मंदिर। यहां भगवान श्रीगणेश की विशाल प्रतिमा स्थापित है, इसलिए इसे बड़ा गणेश मंदिर कहते हैं। इस मंदिर से भी कई मान्यताएं और परंपराएं जुड़ी हुई हैं।

नागचंद्रेश्वर मंदिर

ये मंदिर महाकाल के सबसे ऊपरी शिखर पर स्थापित है। इस मंदिर की विशेषता ये है कि ये साल में सिर्फ एक बार खुलता है नागपंचमी पर। यहां एक प्राचीन प्रतिम स्थापित है। इसमें शेषनाग पर शिव-पार्वती विराजमान है। मान्यता है कि यहां तक्षक नाग निवास करता है।

राम जनार्दन मंदिर

ये मंदिर भी काफी प्राचीन है जो विष्णु सागर के

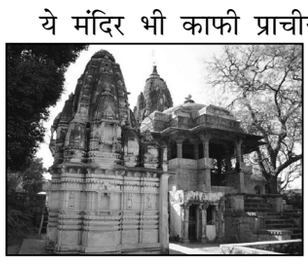

निकट स्थित है। इस मंदिर का निर्माण राजा जयसिंह ने सत्रहवीं शताब्दी में करवाया था। यहां भगवान श्रीराम के साथ लक्ष्मण और देवी सीता की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है।

सप्त सागर, कहीं चढ़ाते हैं खीर तो कहीं मालपुआ

उज्जैन ■ एजेंसी

उज्जैन में अलग-अलग स्थानों पर 7 तालाब हैं, जिन्हें सप्त सागर कहा जाता है। इनका वर्णन स्कंद पुराण आदि कई ग्रंथों में मिलता है। वैसे तो यहां प्रतिदिन पूजा-पाठ की जाती है, लेकिन अधिक मास के दौरान एक ही दिन में 7 सप्तसागरों की परिक्रमा करने की परंपरा है। इस दौरान हर तालाब में कुछ खास चीजें चढ़ाई जाती हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से शुभ फल मिलते हैं जीवन के सभी कष्ट भी दूर होते हैं। आगे जानिए किस तालाब (सागर) में कौन-सी चीज चढ़ाई जाती है-

सप्त सागर

सप्तसागर के अंतर्गत आने वाले पहले सागर का नाम रुद्रसागर है, जो महाकाल मंदिर और हरसिद्धि मंदिर के बीच स्थित है। भक्त यहां नमक, सफेद कपड़े और चांदी के नंदी अर्पित करते हैं।

पुष्कर सागर

सप्त सागरों में दूसरा है पुष्कर सागर। ये महाकाल मंदिर से कुछ ही दूरी पर नलिया बाखल क्षेत्र में स्थित है। यहां पीले वस्त्र व चने की दाल चढ़ाई जाती है।

क्षीर सागर

नई सड़क पर स्थित है क्षीर सागर। यहां साबूदाने की खीर और बर्तन चढ़ाने की परंपरा है।।

गोवर्धन सागर

चौथे सागर का नाम है गोवर्धन। ये निकास चौराहे पर स्थित है। यहां माखन-मिश्री, गेहूं और लाल कपड़े चढ़ाने का विधान है।

रत्नाकर सागर

उज्जैन शहर के लगभग 4 किमी दूर ग्राम उंडासा में है रत्नाकर सागर। यहां पंचरत्न, महिलाओं के शृंगार की सामग्री और महिलाओं के वस्त्र चढ़ाने की परंपरा है।

विष्णु सागर

प्राचीन राम जनार्दन के पास स्थित है विष्णु सागर, भक्त यहां पंचपात्र, ग्रंथ, माला आदि चीजें चढ़ाते हैं।

पुरुषोत्तम सागर

इंदिरा नगर के नजदीक स्थित है पुरुषोत्तम सागर, यहां चलनी और मालपुआ अर्पित करते हैं।

अधिक मास में ही क्यों करते हैं सप्तसागरों की परिक्रमा?

अधिक मास 3 साल में एक बार आता है। इसे मल मास भी कहते हैं। धार्मिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। जब भी अधिक मास होता है तो श्रद्धालु सप्तसागरों की परिक्रमा जरूर करते हैं, मान्यता है ऐसा करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। अधिक मास भगवान विष्णु से संबंधित है, इसलिए इस महीने में किए गए धार्मिक कार्यों का फल कई गुना होकर मिलता है। यहीं कारण है कि अधिक मास में सप्त सागरों की परिक्रमा की जाती है।

आज मध्य प्रदेश के हजारों मंदिरों में जलेंगे दीपक

उज्जैन ■ एजेंसी

इस बार दीपावली 24 अक्टूबर है लेकिन उज्जैन में ये पर्व 11 अक्टूबर को भी मनाया जाएगा। मौका होगा महाकाल लोक प्रोजेक्ट के लोकार्पण समारोह का। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित देश की कई बड़ी हस्तियां शामिल होंगी। इस मौके पर प्रदेशभर के करीब 25 हजार मंदिरों में दीप सज्जा और भजन-कीर्तन होंगे।

इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोग शामिल हो या वे लाइव इस कार्यक्रम को देख सकें, इसके तैयारियां की जा रही हैं। घर-घर जाकर निमंत्रण पत्र बांटे जा रहे हैं। लोगों से अपील की जा रही है कि वे भी अपने घरों में दीपक जलाएं।

5 दिन तक मनाया जाएगा लोकार्पण कार्यक्रम- महाकाल लोक का लोकार्पण कार्यक्रम 5 दिन पहले से शुरू हो जाएंगे। इस इवेंट को अधिक से अधिक लोक देख सकें, इसके लिए आस-पास के गांवों में बड़ी टीवी स्क्रीन लगाई जाएंगी।

सबसे ज्यादा फोकस शिव मंदिरों की ओर रहेगा। प्रदेश में 23 हजार सरकारी मंदिर व ट्रस्ट हैं। 2 हजार से ज्यादा मंदिरों की देखरेख निजी स्तर पर की जाती है। इन मंदिरों में 11 अक्टूबर की शाम 5 बजे दीप प्रज्ज्वलन किया जाएगा। वहीं, पूजा-अर्चना और भजन-कीर्तन भी किए जाएंगे।

उज्जैन ही नहीं भोपाल और इंदौर में भी होगा सीधा प्रसारण- महाकाल लोक प्रोजेक्ट का सीधा प्रसारण उज्जैन के आस-पास के गांवों में तो होगा ही साथ ही इंदौर और भोपाल में इसे देखने के लिए एलइडी स्क्रीन लगाई जाएगी ताकि अधिक से अधिक लोग इस कार्यक्रम को देख सकें। इंदौर के मंदिर में भी खास आयोजन इस दिन किए जाएंगे। इंदौर के आस-पास के सभी गांवों में महाकाल लोक से संबंधित फ्लेक्स, होर्डिंग लगाए गए हैं। राजधानी भोपाल के सभी मंदिरों में स्क्रीन लगाने का प्लान है।

क्या है महाकाल लोक प्रोजेक्ट?- उज्जैन को मध्य प्रदेश की धार्मिक राजधानी कहा जाता है। वैसे तो यहां अनेक प्रसिद्ध मंदिर हैं, लेकिन सबसे बड़ा आकर्षण महाकालेश्वर मंदिर है, जो 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। इस मंदिर का विस्तार कर इसे भव्य रूप दिया जा रहा है। महाकाल लोक लगभग 20 हेक्टेयर भूमि पर बनाया गया है, जहां भक्तों के लिए कई सुविधाएं जुटाई जा रही हैं। महाकाल लोक प्रोजेक्ट के पहले चरण में लगभग 800 करोड़ का खर्च आया है।